प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट

चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट

अप्रैल 2002–मार्च 2003

A-708, आनंदलोक, मयूर विहार–I, दिल्ली–110091
दूरभाष : (011) 22752375 ई-मेल : www.pratichi.org

ट्रस्टी

अमर्त्य सेन	चेयर	मास्टर,, ट्रीनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज, यूके
अन्तरा देव सेन	मैनेजिंग ट्रस्टी	संपादक, द लिटिल मैगजीन, दिल्ली, भारत
दिपंकर घोश	ट्रस्टी	सॉलिसिटर, कोलकत्ता, भारत

सलाहकार

एम्मा रौथस्चाइल्ड		फेलो, किंग्स कॉलेज, कैंब्रिज, यूके
एम एस स्वामीनाथन	चेयरमैन	एम एस स्वामीनाथन फाउंडेशन, चेन्नई, भारत
नबनीता देव सेन		शिक्षाविद एवं लेखक, कोलकत्ता, भारत
प्रतीक कांजीलाल		प्रकाशक, द लिटिल मैगजीन, दिल्ली, भारत
यशोधरा बागची		शिक्षाविद, कोलकत्ता, भारत

समन्वय समिति (शांतिनिकेतन)

निलांजन बनर्जी	प्रवक्ता. विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, भारत
सामन्तक दास	रीडर, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, भारत
शिवादित्य सेन	प्रवक्ता, सूरी विद्यासागर कॉलेज, सूरी, इंडिया

उद्देश्य

- शिक्षा का विकास, विशेष रूप से प्राथमिक और बुनियादी शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर जोर
- शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ, जरूरतमंद, विशेष रूप से लड़कियों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाना
- सामाजिक समानता के कार्य के लिए मानवीयता के आधार पर सेवा कार्य करना

बीता वर्ष : 2002–2003

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट के लिए ये एक गतिविधियों भरा वर्ष रहा। पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में स्थित ट्रस्ट का मुख्य कार्य, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के क्षेत्र में शोध करना है। शोध के अलावा मानवीयता और धर्मार्थ के लिए कार्य करना ट्रस्ट का प्रमुख कार्य क्षेत्र रहा है। उदाहरण के तौर पर उड़ीसा के कियादा गांव में प्रतीची स्कूल में बच्चों को दोपहर का भोजन उपब्लध करवाने से काफी उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले। न सिर्फ बच्चों में बल्कि अनपढ़ व्यस्क ग्रामीण भी इस कार्यक्रम से काफी उत्साहित दिखे।

इस वर्ष ट्रस्ट पर दुःख की छाया रही। ट्रस्ट को दिपंकर घोष के निधन से शोक संतप्त होना पड़ा। इसके कुछ दिनों बाद वरिष्ठ एडवोकेट आर. के.पी. शंकरदास को ट्रस्टी बनाया गया। हालांकि श्री शंकरदास, प्रतीची से शुरूआती दिनों से ही जुड़े रहे हैं। इस वर्ष सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार ए.जे. फिलिप ट्रस्ट के निदेशक भी रहे।

I. शोध कार्य

प्रतीची के शोधकार्य मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर ही केंद्रित रहे। ये शोध कार्य ट्रस्ट के अध्यक्ष अमर्त्य सेन की देखरेख और निर्देशन में हुए। इस समय छह शोधकर्ता शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में प्रतीची प्रोजेक्ट के साथ कार्यरत हैं। इस वर्ष के दौरान ट्रस्ट ने अपने शोधकार्यों में काफी उपलब्धियां हासिल की हैं।

(1) 16 अगस्त 2002 को कोलकत्ता के ताज बंगाल होटल में पत्रकारों और विद्वानों की मौजूदगी के बीच अमर्त्य सेन ने *प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट–वन* जारी की। इस रिपोर्ट का शीर्षक था *प्राथमिक शिक्षाः पश्चिम बंगाल में एक अध्ययन।* ये रिपोर्ट पश्चिम बंगाल के तीन जिलों में प्रतीची शोधकर्ता के दल द्वारा किए गए शोधकार्य पर आधारित थी। ये तीनों जिले बीरभूम, मिदिनापुर और पुरूलिया थे। इस रिपोर्ट ने मुख्य रूप से विद्वानों और नीति–निर्माताओं के साथ–साथ राज्य के उन लोगों में काफी सनसनी फैला दी, जो शिक्षा व्यवस्था से जुड़े हुए हैं। यही नहीं, इस रिपोर्ट ने समाज के हर वर्ग को विस्तार से बहस करने और इस बारे में सोचने के लिए मजबूर कर दिया। *प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट–वन* ट्रस्ट उठाए गए कुछ मुद्दे तो कई महीनों तक मीडिया की खुराक बने रहे।

(2) *प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट–वन* के बाद प्रतीची शोध दल ने अपने कार्य क्षेत्र में पश्चिम बंगाल के तीन और जिलों–वर्दमान, मुर्शिदाबाद और दार्जिलिंग को शामिल कर लिया। इन तीन जिलों में करीब 20 गांव में हुए इस अध्ययन के लिए फील्ड वर्क पांच शोध सहयोगियों ने किया। इस अध्ययन ने वही बातें साबित की, जो पहले ही रिपोर्ट में रेखांकित की गई थी।

(3) इसके बाद प्राथमिक शिक्षा पर शोध के कार्य का पड़ोसी राज्य झारखंड में भी विस्तार किया गया। इसमें भी अध्ययन के पुराने तरीकों को अपनाया गया। शोधकर्ताओं ने झारखंड के दुमका जिले के 12 गांवों में आंकड़े इकट्ठे किए। इस अध्ययन को द *डिस्कवरी ऑफ प्राइमरी एजुकेशन इन झारखंड* का नाम दिया गया।

(4) ट्रस्ट का अगला कार्यक्रम पश्चिम बंगाल के छह जिलों और झारखंड से मिले आंकड़ों पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना था। *प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट* टू प. बंगाल शिक्षा रिपोर्ट, झारखंड शिक्षा रिपोर्ट और इन दोनों राज्यों में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति पर एक तुलनात्मक रिपोर्ट तैयार करना है। इसका शीर्षक रखा गया है *डिलीवरी ऑफ प्राइमरी एजुकेशन*

इन वेस्ट बंगाल एंड झारखंड भारत में प्राथमिक शिक्षा पर किया गया ये शोध मील का पत्थर साबित होगा–ऐसी संभावना है।

(5) इस वर्ष के दौरान ट्रस्ट ने एक अन्य लेकिन काफी महत्वपूर्ण क्षेत्र–स्वास्थ्य की दिशा में शोध करने का निर्णय किया। विशेष रूप से बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता पर पं. बंगाल के बीरभूम और झारखंड के दुमका जिले में अध्ययन कर आंकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन के दौरान इन दोनों जिलों के 12 गांवों में सर्वेक्षण किए गए। ये वहीं गांव थे, जहां पहले प्राथमिक शिक्षा के लिए अध्ययन किया गया था। इस रिपोर्ट का शीर्षक *द डिलीवरी ऑफ बेसिक हेल्थ सर्विसेस इन वेस्ट बंगाल एंड झारखंडः ए स्टडी इन बीरभूम एंड दुमका डिस्ट्रिक्ट* रखा गया है। इस समय इस रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

(6) शोध अध्ययन के प्रति ट्रस्ट के भागीदारी वाले रुख के कारण ही ट्रस्ट आंकड़े हासिल करने के बाद, फिर उन्हीं गांवों में गया और अमर्त्य सेन द्वारा प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर तैयार अध्ययन पत्र का बांगला भाषा में अनुवाद कर, संबंधित गांवों में वितरित किया गया। ये अपनी तरह का पहला प्रयास था। ट्रस्ट ने प्राप्त आंकड़ों से गांव वालों को अवगत करवाया, ताकि गांव वाले अपनी स्थिति को समझ सकें। इसमें फील्डवर्क के दौरान शोधकर्ताओं के दल को मिले ग्रामीणों के सहयोग, उनसे मिली सूचना के साथ–साथ, उनके समय आदि के बदले बतौर धन्यवाद के रूप में ट्रस्ट ने ये आंकड़े गांववालों से बांटे।

संगोष्ठियां और कार्यशालाएं

वर्ष भर की गतिविधियों की समीक्षा के लिए प्रतीची ने दो महत्वपूर्ण कार्यशालाओं का आयोजन किया। पहला शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन था, जिसमें विश्व भर के विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में मानव सुरक्षा और समानता के संदर्भ में समाज और विश्व की स्थितियों के तहत शिक्षा के विस्तृत परिदृश्य पर चर्चा की गई। इसी के ठीक प्रतिकूल दूसरी कार्यशाला में ट्रस्ट ने उन गांवों के माता–पिता और शिक्षकों को शामिल किया, जहां ट्रस्ट ने अध्ययन किए थे और अध्ययन में मिले तथ्यों पर चर्चा की थी। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले माता–पिता और शिक्षकों के साथ विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के उपायों पर विचार विमर्श किया गया।

(1) शिक्षा, न्याय और मानव सुरक्षा पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन मानव सुरक्षा आायोग, ग्लोबल इक्विटी इनिशियेटिव (हारवर्ड विश्वविद्यालय) और यूनिसेफ के सहयोग से किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन 10 से 12 जनवरी 2003 को कोलकत्ता के ताज बंगाल होटल में किया गया। पश्चिम बंगाल और झारखंड में प्रतीची द्वारा प्राथमिक शिक्षा पर किए गए अध्ययन रिपोर्ट पर इस सम्मेलन में विस्तार से चर्चा की गई। इसके अलावा उन मुद्दों पर भी चर्चा की गई, जो प्राथमिक रूप से शिक्षा को प्रभावित करते हैं। यानी राज्य की नीतियां, माता–पिता की भागीदारी से लेकर दोपहर–भोजन और सामाजिक पक्षपात जैसे मुद्दों पर भी गंभीरता से चर्चा की गई।
मानव अधिकार और सुरक्षा के संदर्भ में शिक्षा के बारे में भारत, बंग्लादेश, अमेरिका और ब्रिटेन से आए करीब 30 विद्वानों ने काफी गंभीरता से चर्चा की। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले विद्वानों में करीब आधे ऐसे थे, जिन्होंने सन् 2002 में हुए पहले सम्मेलन में भी भाग लिया था।

अमर्त्य सेन ने अपने उद्‌बोधन में स्कूली शिक्षा के पूरे परिदृश्य और चुनौतियों का विस्तार से बयान किया। इस सम्मेलन में पश्चिम बंगाल के वित्तमंत्री असीमदास गुप्त ने शिशु शिक्षा केंद्र के क्षेत्र में आश्चर्यजनक रूप से किसी उपलब्धियों के मद्देनजर अपने विचार रखे। कम कीमत पर राज्य में गांव आधारित स्कूल के रूप में शिशु शिक्षा केंद्र को मिली सफलता काफी आश्चर्यजनक रही है। कार्यशाला में पश्चिम बंगाल के ग्रामीण अंचलों से लिए तथ्यों की *प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट–वन* पर विस्तार से चर्चा की गई। इसके अलावा प्रतीची शोधकर्ता दल को मिले नए तथ्यों को भी कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया।

(2) पश्चिम बंगाल में शांति निकेतन में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में शिक्षकों

और माता–पिता की भूमिका पर 6 जुलाई 2002 को एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। पश्चिम बंगाल के उन सभी 6 जिलों के 34 गांवों के शिक्षक और माता–पिताओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया, जहां प्रतीची ने अध्ययन किए थे और माता–पिता, शिक्षक कार्यशालाएं आयोजित की थीं।

अमर्त्य सेन ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया था। भाग लेने वालों में 36 प्राथमिक स्कूलों और 35 शिशु शिक्षा केंद्रों के प्रधान शिक्षक और सहायिकाओं के साथ–साथ हर प्राथमिक स्कूल और शिशु शिक्षा केंद्र से एक–एक माता–पिता शामिल थे। अध्ययन में मिली जानकारियों पर एक रिपोर्ट तैयार की गई थी, जिसे कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों में वितरित किया गया।

कार्यशाला में जाति, वर्ग, धर्म, लिंग आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई, जो प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में मुख्य रूप से बाधा पहुंचा रही है। इसके अलावा गुणवत्तापरक प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाने के विभिन्न उपायों पर और माता–पिता शिक्षक समिति की सफारिशों पर खुल कर विचार विमर्श किया गया। इसमें स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति को बढ़ाने, प्रोत्साहन कार्यक्रमों और दोपहर का भोजन कार्यक्रम के उचित कार्यांवयन और प्राथमिक शिक्षा संस्थानों की सुविधाएं उपलब्ध करवाना आदि मुख्य विषय थे। सभी को समान शिक्षा उपलब्ध करवाने में सामाजिक संगठनों विशेष रूप शिक्षक संघ की भूमिका पर जोर दिया गया। प्रभावी शिक्षा के लिए माता–पिता और शिक्षकों के बीच समन्वय सहयोगिता को काफी महत्व दिया गया।

प्रतीची भवन

ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य शिक्षा से शोध करना है। इसी के तहत ट्रस्ट ने प्रतीची भवन के लिए एक ब्लू प्रिंट यानी खाका तैयार किया है। यह भवन शिक्षा पर शोध संस्थान की तरह कार्य करेगा। ट्रस्ट का मानना है कि स्कूली शिक्षा को प्रभावी बनाने में यह संस्थान काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी कि यह पूरे देश के लिए फायदेमंद साबित होगा।

पश्चिम बंगाल सरकार से दीर्घकालिक लीज पर ट्रस्ट ने इसके लिए कोलकत्ता के सॉल्टलेक में एक उपयुक्त जमीन ली है। यह जमीन इंस्टीट्यूशनल एरिया में स्थित है। जमीन ऐसी जगह है, जहां विद्वान और शोधकर्ता बहुत ही शांतिप्रद वातावरण में कार्य कर सकते हैं। पिछले वर्ष जमीन के लिए प्राथमिक कागजी कार्यवाही और संस्थान के भवन निर्माण योजना के कार्य को पूरा कर लिया गया है।

II. विशेष प्रोजेक्ट

शिक्षा पर शोध जैसे मुख्य कार्य के अलावा प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट की एक शाखा, मानवता और धर्मार्थ के कार्य के सलंग्न है। यह शाखा प्राकृतिक आपदा जैसी स्थितियों में विशाल स्तर पर प्रभावित लोगों को नये सिरे से जीवन यापन करने में सहायता प्रदान करती है।

उड़ीसा प्रोजेक्ट

1999 में उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में आए सुपर साइक्लोन एक भयावह प्राकृतिक आपदा थी। हजारों लोग मारे गए, गांव के गांव बह गए। एक अनुमान के अनुसार करीब दस हजार लोगों की मौत हो गई थी और अनगिनत लोग बेघर हो गए थे। इस प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों के पुर्नवास के लिए ट्रस्ट ने एक दीर्घकालिक और विस्तृत योजना तैयार की है। प्रतीचीकर्मियों द्वारा किए गए अध्ययन में यह महसूस किया गया कि स्कूल और स्वास्थ्य सेवाओं से युक्त एक बहुउद्देशीय संस्थान की बेहद जरूरत है। उड़ीसा सरकार ने इसके लिए कियादा गांव में डेढ़ एकड़ जमीन ट्रस्ट को दी। जगतसिंगपुर जिला भीषण तूफान में सबसे अधिक प्रभावित हुआ था। इसलिए यहां ऐसे एक केंद्र की स्थापना की जरूरत सबसे अधिक महसूस की गई।

इस वर्ष की समीक्षा के बाद ट्रस्ट प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का विस्तार कर सकता है। इसके तहत प्रतीची इस क्षेत्र में एक प्राथमिक स्कूल शुरू कर रहा है और समय–समय पर चिकित्सा शिविर भी लगा रहा है।

प्रतीची स्कूल

(1) प्रतीची स्कूल दूरसामा ब्लाक के नागारी गांव में स्थित है। इस समय यह अस्थायी रूप से टाटा रिलीफ द्वारा निर्मित तूफान पीड़ितों के लिए बनाई गई एक इमारत में स्थित है। जब प्रस्तावित बहुउद्देशीय सामुदायिक केंद्र बन जाएगा, तब स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र वहां स्थानांतरित हो जाएगा।

प्राथमिक स्कूल में इस समय 30 छात्र भर्ती हैं। स्कूल में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। प्रतीची, स्कूल के सभी छात्रों को दोपहर का भोजन उपलब्ध करवाता है और छात्रों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए समय–समय पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने की व्यवस्था करता है।

ऐसा देखा गया है कि मुफ्त शिक्षा हमेशा ग्रामीण भारत में कामयाब नहीं रही है। इसलिए माता–पिता को जागरूक बनाये रखने के लिए बच्चों से 20 रुपए प्रति

माह फीस ली जाती है। दाखिला फीस भी 100 रुपये रखी गई है। बहुत ही गरीब माता–पिता जो फीस देने में बिलकुल भी सक्षम नहीं हैं, उनके लिए विशेष अनुमति के बाद उनके बच्चों को मुफ्त शिक्षा और बिना फीस दाखिले का भी प्रावधान है। बुनियादी शिक्षा, और शिक्षक के अलावा एक आया की भी व्यवस्था है, जिससे सीमित समय में प्रत्येक बच्चे की ठीक से देखभाल की जा सके। इसमें पोषण, स्वास्थ्य सेवा और व्यक्तिगत स्वच्छता का विशेष ख्याल रखा जाता है। हर छोटी–छोटी चीज जैसे नाखून काटना, पीने का पानी उबालना आदि बातों का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।

(2) दोपहर के भोजन की योजना

द प्रतीची एजुकेशन रिपोर्ट–वन की भूमिका में अमर्त्य सेन ने कई ऐसे कारण बताए, जिस वजह से स्कूली शिक्षा के विकास व प्रसार के लिए दोपहर का तैयार भोजन उपलब्ध करवाना अति आवश्यक हो जाता है।

(1) तैयार भोजन बच्चों के स्वास्थ्य के लिए काफी पौष्टिक रहता है।
(2) इसकी वजह से बच्चों को स्कूल में उपस्थित रहने का उत्साह मिलता है।
(3) दोपहर का तैयार भोजन मिलने से काफी हद तक वितरित होने वाले सूखे राशन से जुड़े भ्रष्टाचार को रोकने में भी मदद मिलती है।

पूरक पौष्टिक आहार न सिर्फ स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह स्कूली शिक्षा को प्रभावी तरीके से लागू करने में भी काफी उपयोगी है। हालांकि यह अलग बात है कि सब सहारा अफ्रीका समेत विश्व के कई क्षेत्रों की तुलना में भारत में कुपोषित बच्चों की संख्या काफी अधिक है।

प्रतीची ने जब नागारी गांव में स्कूल की शुरूआत की, तो तय किया गया कि बच्चों को दोपहर का तैयार भोजन दिया जाए। यहां बहुत सारे बच्चे काफी गरीब थे। ऐसे में कम से कम एक वक्त का संपूर्ण भोजन उन्हें अवश्य दिया जाए, ताकि वे जीवित रह सकें। समय के साथ यह साबित हो गया कि दोपहर का भोजन बच्चों के पोषण के लिए काफी महत्वपूर्ण है। दोपहर के भोजन में दाल–चावल, सब्जियां और एक मांसाहारी चीज होती है। सप्ताह में दो बार अंडे और प्राउन भोजन में दिए जाते हैं।

भोजन स्कूल परिसर में ही बनाया जाता है और बच्चों को गर्म–गर्म ही खाने के लिए दिया जाता है। स्कूल के कर्मचारी भी यही भोजन करते हैं। इसलिए भोजन हमेशा साफ–सुथरा और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। यह एक महत्वपूर्ण कारण है कि बच्चे सौ फीसदी उपस्थित रहते हैं। यही नहीं, बच्चे स्कूल आने को काफी इच्छुक रहते हैं।

(3) माता–पिता शिक्षक मिलन

द प्रतीची एजुकेशन रिपोर्ट–वन की भूमिका में प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट के अध्यक्ष अमर्त्य सेन ने इस बात का विशेष उल्लेख किया है कि यदि माता–पिता शिक्षक समिति को कुछ कानूनी अधिकार दिए जाए तो स्कूली व्यवस्था को काफी लाभ मिलेगा। यहां तक कि उनके अनुमोदन पर ही उपयुक्त परिस्थितियां और माहौल बनाया जा सकेगा। प्रत्येक स्कूल में माता–पिता शिक्षक समिति के संदर्भ में कुछ सलाह का भी विशेष उल्लेख रिपोर्ट में किया गया। इसी आधार पर प्रतीची स्कूल ने ऐसी ही समिति बनाने का निर्णय किया है। इसकी माह में एक बार बैठक बुलाई जाती है, जिसमें माता–पिता, शिक्षक, गांव वाले और प्रतीची के कर्मचारी इसमें भाग लेते हैं। इस बैठक में माता–पिता स्कूल की गतिविधियों की समीक्षा करते हैं, और विभिन्न मुद्दों पर शिक्षकों से सलाह लेते हैं। इसमें स्कूल के कर्मचारी, बच्चों के हाल के बारे में अपनी बात रखते हैं और खामियों को दूर करने के लिए सलाह भी देते हैं।

प्रतीची के कर्मचारी माता–पिता शिक्षक सम्मेलन का उपयोग, जनसाधारण में जागरूकता लाने के लिए भी करते हैं। इसके जरिए उन अनपढ़ माता–पिता और अन्य गांव वालों को बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके परिणाम भी देखने को मिले हैं। कुछ वयस्कों ने गैर–स्कूली प्रणाली के जरिए शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा भी जाहिर की थी। इस कारण व्यस्कों के लिए भी शिक्षा उपलब्ध करवाने के बारे में विचार किया जा रहा है। ऐसा देखा जा रहा है कि बच्चों को दोपहर का भोजन उपलब्ध करवाने में माता–पिता शिक्षक समिति के सदस्य स्वेच्छा से स्कूल कर्मचारियों को मदद दे रहे हैं।

(4) चिकित्सा शिविर

प्रोजेक्ट क्षेत्र में प्राथमिक और बुनियादी चिकित्सा सेवा की काफी कमी देखी गई। इसलिए प्रतीची ने स्थानीय जनता को नियमित चिकित्सा सुविधा और स्वास्थ्य जांच की सुविधा उपलब्ध करवाई। इसके परिणाम काफी उत्साहजनक रहे। दूर–दराज के गांवों से भी लोग इस अवसर का लाभ उठाने के लिए शिविर में आए।

शुरूआती दौर में सीमित मगर केंद्रित व्यवस्था थी। शुरूआत में सिर्फ प्रोजेक्ट क्षेत्र में ही चिकित्सा शिविर लगाए जाते थे और इनमें विशेष रूप से महिलाएं और बच्चों को ही चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवायी जाती थी। धीरे–धीरे लोगों की संख्या में वृद्धि होने लगी। इससे चिकित्सा शिविर को स्वास्थ्य शिविर में बदल दिया गया। नागारी गांव में तूफान पीड़ितों के लिए बनाए गए राहत आवास में ही स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसके लिए ट्रस्ट ने शहर के अस्पतालों से डाक्टरों को बुलाया और हर 15 दिनों में एक बार चिकित्सा शिविर लगाना शुरू किया।

इन स्वास्थ्य शिविरों के लिए भुवनेश्वर और जगतसिंगपुर जिला मुख्यालय से एक बच्चों का और एक महिलाओं की डाक्टर को नियमित रूप से नियुक्त किया गया। इसके अलावा कुछ विजिटिंग डाक्टरों को इस कार्य से जोड़ा गया।

प्रतीची ने मां और बच्चों को स्वास्थ्य की देखभाल पर विशेष जोर दिया, जिसमें रोकथाम उपायों को महत्व दिया जाता है। हालांकि रोग का पता लगाना और उसका इलाज करना इन स्वास्थ्य शिविरों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहता है। ऐसे प्रत्येक शिविर में औसतन कम से कम 50 मरीज अवश्य आते हैं। ये शिविर माह में दो बार लगाए जाते हैं।

अनुदान और मदद

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के विकास में कार्यरत छोटे संगठनों और व्यक्ति विशेष को भी ट्रस्ट सहायता उपलब्ध करवाता है। ट्रस्ट वित्तीय मदद भी देता है। मगर यह काफी छोटी होती है और आम तौर पर एक बार ही अनुदान के रूप में दी जाती है।

ट्रस्ट व्यक्ति विशेष को अस्पताल में इलाज करवाने को प्रोत्साहन नहीं देता है। यही नहीं, यह किसी बड़े संस्थान को अनुदान देने का समर्थन नहीं करता है। ट्रस्ट किसी जरूरत मंद और योग्य छात्र को छात्रवृत्ति के रूप में ही अनुदान देता है। या फिर, किसी छोटे स्वयंसेवी संगठन को मामूली सहायता उपलब्ध करवाता है, जिससे संगठन को अपना काम करने के लिए उचित माहौल मिल सके। चूंकि ट्रस्ट वास्तव में सहायता प्रदान करने वाली संस्था नहीं है, इसलिए अनुदान की राशि भी बहुत मामूली होती है।

उपसंहार

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट अब भी अपने शैशवकाल में है और इसे मीलों दूर जाना है। हालांकि शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में इसके शोधकार्यों ने नीति निर्माताओं पर काफी गहरे प्रभाव डाले हैं। उड़ीसा में प्रतीची स्कूल हालांकि बहुत ही छोटा प्रयास है, फिर भी यह सबसे अलग है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट में भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता है।

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट

31 मार्च, 2003 का स्थिति विवरण

कोष और दायित्व	अनुसूची	राशि (रू0)
ट्रस्ट कोष	ए	10,000,000.00
विशेष कोष	बी	2,698,879.50
प्रतीची भवन परियोजना	सी	14,667,745.31
चालू दायित्व	डी	32,240.53
आय और व्यय खाता	इ	634,880.23
नियंत्रण राशि कोषों की परिसंपत्तियों के लिये		134,331.00
कुल योग		28,168,076.57

परिसंपत्तियां

स्थायी परिसंपत्तियाँ	एफ	18,195.05
कोषों की परिसंपत्तियाँ	जी	134,331.00
निवेश लागत	एच	26,947,126.63
निक्षेप और अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	आई	202,636.48
रोकड़ और बैंक शेष	जे	865,787.41
कुल योग		28,168,076.57

हमारे विश्वास के अनुसार उपरोक्त स्थिति विवरण ट्रस्ट के कोष और दायित्व और परिसंपत्तियों का सत्य हिसाब है ।

हस्ताक्षरित
ट्रस्टी
प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट,
दिल्ली

इस तारीख की रिपोर्ट के अनुसार
दिनेश कुमार भट्ट एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउंटेंट

हस्ताक्षरित
दिनेश कुमार
प्रोप्राईटर
सदस्य संख्या : 95553

दिल्ली
9 सितंबर, 2003

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट

		राशि (रू0)
<u>ट्रस्ट कोष</u>	अनुसूची 'ए'	
गत स्थिति विवरण के अनुसार		10,000,000.00
		10,000,000.00
<u>विशेष कोष</u>	अनुसूची 'बी'	
गत स्थिति विवरण के अनुसार		2,729,496.10
घटाया :–इस वर्ष के व्यय प्रतीची स्कूल नगरी		30,616.60
		2,698,879.50
<u>प्रतीची भवन योजना</u>	अनुसूची 'सी'	
गत स्थिति विवरण के अनुसार	14,350,092.35	
अन्य अनुदान	100,000.00	
जमा निवेशों के ब्याज और अन्य आय	1,449,789.86	15,899,882.21
घटाया :–इस वर्ष के व्यय स्थायी परिसंपत्तियों पर	119,287.00	
इस वर्ष के व्यय	1,112,849.90	1,232,136.90
		14,667,745.31
<u>चालू दायित्व</u>	अनूसूची 'डी'	
अदत्त व्यय		7,200.00
ट्रस्टी को देय		25,040.53
		32,240.53
<u>आय और व्यय खाता</u>	अनुसूची 'ई'	
गत स्थिति विवरण के अनुसार	996,689.13	
जमा :– इस वर्ष के आय	467,784.33	1,464,473.46
घटाया :– इस वर्ष के व्यय		829,593.23
		634,880.23
<u>स्थायी परिसंपत्तियां</u>	अनुसूची ' एफ'	
गत स्थिति विवरण के अनुसार	24,322.61	
जमा :– चालू वर्ष का क्रय	4,500.00	
घटाया :– इस वर्ष के अवमूल्य (डेप्रीसिएशन)	10,627.56	18,195.05
		18,195.05

कोषों की परिसंपत्तियाँ	अनुसूची 'जी'	
प्रतीची भवन परिसंपत्ति		119,287.00
प्रतीची स्कूल परिसंपत्ति		15,044.00
		134,331.00

निवेश लागत	अनुसूची 'एच'	
स्टेट बैंक में फिक्सड डिपोजिट		7,200,000.00
स्टेट बैंक में म्यूच्युअल फंडो में निवेश		12,000,000.00
अन्य म्युच्युअल फंडो में निवेश		7,747,126.63
		26,947,126.63

निक्षेप और अन्य चालू परिसंपत्तियां	अनुसूची 'आई'	
किराया जमानत		25,000.00
निक्षेप और पेशगियाँ		30,313.75
टी.डी.एस		147,322.73
		202,636.48

रोकड और बैंक शेष	अनुसूची 'जे'	
स्टेट बैंक के खाते में शेष		853,980.94
रोकड़		11,806.47
		865,787.41

हमारे विश्वास के अनुसार उपरोक्त स्थिति विवरण ट्रस्ट के कोष और दायित्व और परिसंपत्तियों का सत्य हिसाब है ।

हस्ताक्षरित
ट्रस्टी
प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट,
दिल्ली

इस तारीख की रिपोर्ट के अनुसार
दिनेश कुमार भट्ट एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउंटेंट

हस्ताक्षरित
दिनेश कुमार
प्रोप्राईटर
सदस्य संख्या : 95553

दिल्ली
9 सितंबर, 2003

A-708, आनंदलोक, मयूर विहार–I, दिल्ली–110091
दूरभाष : (011) 22752375 ई-मेल : www.pratichi.org